Digitized by eGangotri

चौराहे से

'मोहन'

H 81
J20 e
14537

Rajiv

हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

कविता माला—१

चौराहे से

[बंग प्रान्त की पीड़ित मानवता के प्रति
कवि का मर्मस्पर्शी उद्‌गार]

SPS
891.431 J 20 C
14537

लेखक—

आशुकवि श्री जगमोहननाथ अवस्थी 'मोहन'
साहित्यमनीषी

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

प्रकाशक—

हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्स, प्रयाग

प्रथमावृत्ति] १९४४ [मूल्य १)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रकाशक—
गयाप्रसाद तिवारी, बी. काम.,
अध्यक्ष हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्स,
शाहगंज, इलाहाबाद ।

acc: no: 14537
Rs 1-0-0

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

मुद्रक—
गयाप्रसाद तिवारी, बी. काम.,
नारायण प्रेस, नारायण बिल्डिंग्स,
शाहगंज, इलाहाबाद ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

दो शब्द

आशुकवि पं० जगमोहन नाथ अवस्थी, 'मोहन' की प्रतिभा से आधुनिक संसार पूर्णतया परिचित है। आप की आशु कविताओं से प्रभावित होकर नगर नगर और ग्राम ग्राम में हिन्दी के नवीन कवियों का उदय हो रहा है। आप का सुसंगठित-शब्द-गुंफन तथा संयत-भाव-व्यञ्जना चमत्कार पूर्ण और आकर्षक है।

प्रस्तुत पुस्तक में कवि ने बंगाल के दुर्भिक्ष-पीड़ितों की करुण कहानी का बड़ा मार्मिक एवं जीता जागता वर्णन किया है। इसमें कवि-हृदय की सच्ची व्यथा, राष्ट्रीय भावना से उद्वेलित होकर अपने उत्कृष्ट रूप में प्रस्फुटित हुई है। अधोलिखित पंक्तियों में देश की आत्मगत परवशता स्पष्ट लक्षित होती है :—

अपनी ही नादानी बनती जग की रामकहानी,
कलकत्ते के फुटपाथों पर सोती चढ़ी जवानी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

इस नादानी की रामकहानी और सोने वाली चढ़ी जवानी में जो संलक्ष्यक्रम व्यंग है उसकी परम्परा पूर्वापर सम्बन्ध से अभिव्यक्त हो जाती है।

ओज भरी उक्तियों का चमत्कार तो स्थल स्थल पर निरन्तर दिखाई देता है। उदाहरणतया:—

अगणित नर-मेधों से अब भी, तूने शान्ति न पाई,
कलकत्ते की काली! क्या! तू! अब भी नहीं अघाई?
आज कुशासन में कितने ही, अन्तिम श्वासें लेते,
जीवन की नौका सूखे में, तड़प तड़प कर खेते।

अथवा

शिव के जटा जूट से गंगा, अम्मृत सा जल लाई,
साठ-सहस्र सगर-सुवनों ने, यहीं सजीवनि पाई।
अन्तकाल विश्राम जान्हवी, आँचल में मिलता है,
जीवन-फूल उसी की लहरों, में पड़ कर खिलता है।

अतीत के गौरव की घोषणा और भविष्य की मंगल-कामना के शब्द-चित्र अंकित करने में भी कवि को पूर्ण सफलता मिली है, यथा:—

यह भी हैं मानव इनके भी नव अरमान भरे थे,
पंच-तत्व-निर्मित-तन सुन्दर यौवन से निखरे थे,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

गूंजा था इनका भी आँगन विहँगों के गीतों से,
हेम बरसता था इनके भी महलों की भीतों से।
जीवन का बसन्त इनके भी खिलकर हँसता आया।
गायी कोकिल और साथ में मदन विहँसता आया।
किन्तु सुखों की दुनिया इनकी ! हाय हो रही सूनी।
ताप रहे हैं आज तपस्वी पड़े मृत्यु की धूनी।

अन्त में, कवि ने विभुक्षितों को संकटापन्न अवस्था से मुक्ति दिलाने के लिये राष्ट्र के विभिन्न अंगों का जो आवाहन किया है और शपथ दिला कर जिस उत्साह का उद्बोधन कराया है उससे कवि की प्रवृत्ति अपने प्रकृत रूप में सामने आ गई है, क्योंकि यहाँ पर मंगल-कामना ही कवि को अभीष्ठ है। यथा :—

शपथ ! पाक मसजिद की ऊँची, सुन्दर मीनारों की,
और शपथ है ठाकुर जी के, भी ठाकुरद्वारों की।
सिक्ख-सपूतो ! शपथ कटारों की, तुमको प्यारों की।
शपथ गुरू गोबिन्द सिंह की, ऊँचे गुरुद्वारों की।
शपथ आज ईसा की, गिरजाघर की दीवारों की,
खुली शपथ ! मानवता की है, जीवन अधिकारों की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

तुमको अपनी शपथ उठो ! बस, अब भी आँखें खोलो ?
मानवता की चादर के यह, काले धब्बे धो लो !

इस पुस्तक से हिन्दी साहित्य की गौरव वृद्धि में जो योग मिला है वह सर्वथा प्रशंसनीय है। मोहन जी की यह कृति विद्वत्समाज में आद्दत होने के नाते साहित्य में अपना अपूर्व स्थान रखती है।

सत्यनारायण पाण्डेय, एम० ए०
कानपुर ४-६-४४ प्रोफेसर,
एस० डी० कालेज, कानपुर।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

मेरी बात

इस छोटी सी पुस्तक में मैं किसी विषय विशेष की विवेचना नहीं करना चाहता। फिर भी, जो कुछ भी हो, कविता "सत्यं शिवं सुन्दरम्" की समष्टि अवश्य है। कवि सौन्दर्य के शाश्वत् रूप को भली भांति पहिचानता है। यही कारण है कि छन्द कवि के अन्तर्नाद का वाह्य रूप बन कर संसार में स्वच्छन्द मंगल स्थापना करते हैं। सच्चा कवि वही है जिसकी कविता में भाव, कल्पना, विचार, व्यक्तित्व, भाषा एवं प्रवाह की विशेषता तथा बाहुल्य हो। कवि देश एवं काल का सच्चा सन्देश वाहक होता है, इसीलिये उसे देश एवं काल की मर्यादा में सीमित रहना पड़ता है।

बस, इस कविता के प्रादुर्भाव का एक यही कारण है। इसका सृजन केवल देश-काल का सच्चा सन्देश जनता जनार्दन के कानों तक पहुँचाने के लिये ही किया गया है। जिस समय मैंने बंगाल के दुर्भिक्ष की अपीलें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

एवं वहाँ की करुण कहानियाँ समाचार पत्रों के पन्नों में में पढ़ीं। इतना ही नहीं, वहाँ के मार्मिक एवं कारुणिक चित्र भी समाचार पत्रों में देखे तो आख़ीर, ठहरा तो मानव हृदय ही, न रहा गया। मेरे कवि को ठेस लगी, हृदय पिघल गया। यदि राजा, सेठ या अन्य वैभव धारी होता तो घर बैठे धन की सहायता करके समाचार पत्रों के पन्नों पर पहिला नाम हेडिंग के नीचे छपवा कर उसमें भी आत्म विज्ञापन के सुनहले सपने देखता और दान की भीति पर ही व्यापार का सोने का महल खड़ा करता। परन्तु एक तो कवि, दूसरे ब्राह्मण भला "चील के घोंसले में माँस कहाँ ?"

फिर भी यह निश्चय किया कि आज के सभ्य युग की दानवता का नग्न चित्र तो देख ही लूं। जहाँ मानव-सौन्दर्य का मूल्य मुट्ठी भर अन्न से भी नहीं आँका जाता, जहाँ, पग पग पर महेश अपनी नव-मुण्ड-माल का नव सृजन कर युगों के लिये मुन्ड-मालायें एकत्र कर रहे हैं, जहाँ कलकत्त की काली के बलिदान के नित्य नये साज सजाये जाते हैं, जिस गंगा सागर की पावन क्रोड़ पर साठ सहस्र सगर-पुत्रों को जीवन-दान मिला था और उनका उद्धार इन्हीं भागीरथी की पावन सुधा-धार से हुआ था, आज उसी देव-भूमि पर साठ सहस्र से कहीं अधिक प्राण विहीन मानवों के प्राण प्रतीक्षा कर रहे हैं। परन्तु अब

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

भी उनके उद्धार का समय नहीं आया। इसका कारण केवल विधाता ही जान सकता है। या, मैं तो यह कहूँगा कि आज के भगीरथ की तपस्या एवं प्रयत्न में ही कुछ कमी है। यही जानने तथा देखने के लिये मैंने कलकत्ते की यात्रा की। वहाँ देहातों में भी जाकर मैंने देखा। वही सब सच्चे दृश्य आज मेरी इस कविता का कारण बन कर, इस रूप में प्रस्फुटित हो कर आप सब के सम्मुख आये हैं।

यही कारण है कि इस पुस्तक का नाम भी मैंने कुछ और न रख कर "चौराहे से" ही इसलिये रखा है कि, मैं, यात्री के रूप में वहाँ गया था। मैंने चारों ओर दृष्टि डाल कर जीवन और मरण के बीच के सच्चे मार्मिक दृश्य देखे थे और उस समय के सच्चे सुख एवं दुख का सच्चा अनुभव किया था। वहीं एक चौराहे पर एक ओर एक नव-युवक जिसका विवाह हो चुका था सहसा भूख से व्याकुल हो कर गिर पड़ा था और उसके प्राण उसी चौराहे की मिट्टी में अनदेखे खो चुके थे। एक क्षण पश्चात् ज्योंही दूसरी ओर दृष्टि गई, त्योंही देखा कि एक माँ अपने बच्चे को दूध पिलाते पिलाते फुटपाथ पर गिर कर प्राणहीन हो गई। उस बच्चे को यह भी ज्ञात नहीं हो सका कि वह जीवित माता का दूध पी रहा है अथवा मृत माता के स्तन से लिपटा है। मैंने यह सब देखा, और न जाने क्यों और कैसे देखा? बस, वहीं से हृदय में एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

प्रकाश की किरण चमकी, ठेस लगी और यह काव्य सृजन हुआ। सहसा उसी जगह मेरी इस पुस्तक का नामकरण संस्कार भी हो गया। इस नाम "चौराहे से" के दो अर्थ हैं। एक तो दुनिया के चौराहे को सम्बोधित करने का है। दूसरे चौराहे पर से चारों दिशाओं को यह सच्चा एवं व्यापक सन्देश देने का है।

इस कविता की सफलता के एक आध प्रमाण भी मैं देना चाहता हूँ। मैंने एक बार इस कविता का पाठ एक कवि सम्मेलन में फ़ीरोज़ाबाद में किया। पढ़ते पढ़ते बीच में ही १० मिनट का अवकाश जनता को इस लिये दिया कि देखूं कविता का प्रभाव जनता पर क्या होता है। उसी बीच में एक हज़ार रुपया जनता ने प्रदान किया। जो बंगाल के क्षुधा-पीड़ितों को श्री पी० के० तैलंग द्वारा दान किया गया था।

इसके पश्चात् मैंने इस रचना को पडरौना (गोरख-पुर) के प्रान्तीय-साहित्य-सम्मेलन के कवि-सम्मेलन के अवसर पर पढ़ा। वहाँ पर मेरे मित्र सहृदय नवयुवक मुन्ना लाल जी खेतान ने इस रचना को पुस्तक रूप में प्रकाशित कराने का अनुरोध किया। मैंने भी विचार किया कि एक कवि आख़िर बंगाल के क्षुधा पीड़ितों को और दे ही क्या सकता है! यही एक अमर तथा उचित भेंट हो सकती है जो उनकी वेदना का सन्देश, देश के कोने कोने तक पहुँ-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चाने में समर्थ हो सकती है। बस, उसी जगह मैंने यह भी निश्चित किया कि यह पुस्तक मैं इन्हीं सहृदय उत्साही मुन्ना लालजी खेतान को ही भेंट करूँ। बस, यह पुस्तक उन्हीं के निरन्तर अनुरोध का फल है। यहाँ पर मैं वयोवृद्ध राय-बहादुर हरीराम जी खेतान का नाम नहीं भूल सकता, उनका सौजन्य भी मेरे उत्साह में अपना हाथ रखता है। अन्त में मैं श्री वी० पी० तिवारी प्राइवेट सेक्रेट्री, विश्वनाथ प्रसाद जी बी० ए० बी० टी० सहायक अध्यापक, तथा श्री ओंकारमल जी खेतान को हृदय से धन्यवाद देता हूँ, उनका भी अधिकसहयोग इस शुभ कार्य में है। साथ ही इस पुस्तक के प्रकाशक श्री जी० पी० तिवारी बी० काम० का भी सहयोग मुझे प्राप्त हुआ है। इसके लिये उन्हें धन्यवाद है। मेरे स्नेही पं० सत्यनारायण जी पाण्डेय, एम० ए० प्रोफ़ेसर सनातन धर्म कालेज कानपुर ने इस छोटी सी पुस्तक के दो शब्द लिखकर मुझे और भी अपने एहसान के भार से दबा दिया है। उन्हें इस अवसर पर धन्ववाद देना आडम्बर नहीं तो लोक-रीति के नाते आवश्यक है।

कवि ईश्वरीय मूल मंत्रों का ज्ञाता एवं द्रष्टा है। भविष्य का जो प्रतिबिम्ब आज वर्तमान के वक्ष-स्थल पर पड़ रहा है उसे कवि दूर से देख कर विश्व के जागरण का सन्देश दे रहा है। इतना ही नहीं मानव जाति को सतर्क हो जीवन-संग्राम में अग्रसर होने के लिये बल देकर आमं-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

त्रित कर रहा है। कवि एवं काव्य दोनों ही संसार एवं समाज के लिये कल्याणकारी हैं।

यह रचना बड़ी है, इसीलिये मेरे किसी काव्य-संग्रह में आकर यह पाठकों के लिये आवश्यकता से अधिक पठन सामग्री हो जाती। यही कारण है कि इसे इस छोटे रूप में पुस्तकाकार पाठकों के सम्मुख लाना पड़ा है। जो कुछ भी हो, इसकी कविता छन्द -शास्त्र एवं काव्य-गुणों से सर्वांग परिपूर्ण है या नहीं इसका निर्णय पाठक स्वयं कर लेंगे।

मुझे विश्वास है, यह रचना भारत के सच्चे अमर इतिहास के एक विशेष अंग की कमी की पूर्ति करेगी। यदि इससे किसी भी सहृदय विद्वान का हृदय तनिक भी प्रभावित हुआ तो मैं उसी को इस काव्य की सच्ची सफलता मानूंगा। मुझे विश्वास है कि मैं वीणा-वादिनि की कृपा एवं उनके आशीर्वाद की प्रेरणा से पाठकों की और भी सेवा कर सकूंगा।

कवि निवास, बादशाहीमंडी,
जेष्ठ विजया दशमी, प्रयाग।

—मोहन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चौराहे से

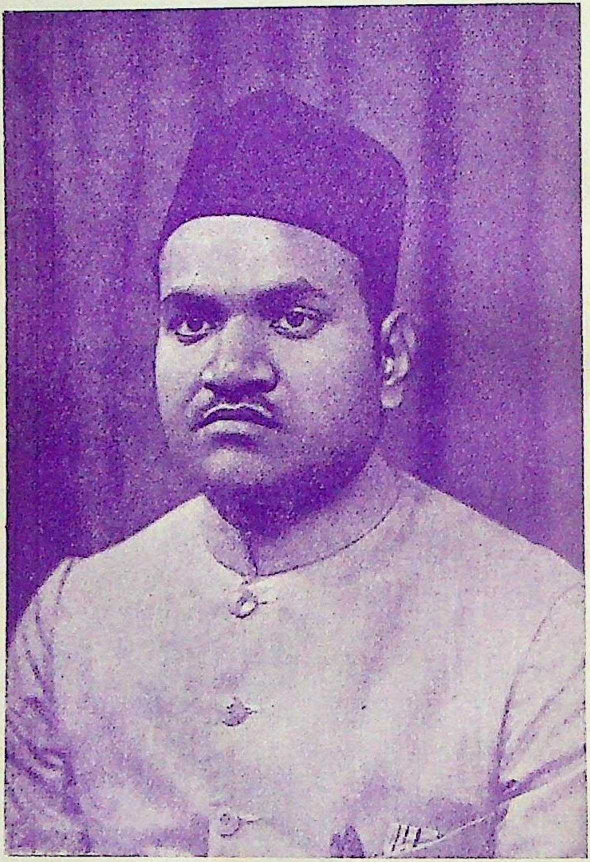

श्रीमान् मन्नालाल जी खेतान, रईस, पड़रौना, गोरखपुर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

स्नेही

श्री मन्नालाल जी खेतान, रईस,

पड़रौना

को ही

समर्पित

लेखक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चौराहे से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चौराहे से

[१]

यह किसके सिन्दूर - चूर - कण,
चौराहे पर बिखरे ?
मंजुल मुक्ता कौन माँग के,
घूंघट-घन से निखरे ?
जीवन - आशा - सीढ़ी किसकी,
टूट गई अनजाने ?
आया कौन पथिक यह अल्हड़,
पथ पर ही खो जाने !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[२]

मृदु झनकार चूड़ियों की किन,
धूलि - धूसरित होती ?
कनक-लता है कौन कि जिसकी,
मूल छिन्न है होती ?
किस माँ की ममता भू - लुंठित,
कुंठित सी होती है ?
किस पावन आँचल से बिखरा,
यह आशा - मोती है ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[३]

किसकी हाय बुढ़ापे की यह,
लकुटी छुटी उठाओ ?
हृदय लुट गया किस माता का,
सोती हो न जगाओ ?
यह भविष्य साकार सुनहला,
भूत बना जाता है,
देश - दूत, यह देव - दूत बस,
आज बना जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[४]

जीवन की साकार कहानी,
अथ होते इति होती,
शाप-त्रिलोचन-द्वार-मार, पर,
यहाँ नहीं रति रोती।
खुले हाथ उनकी रेखाएँ,
मग में हाय बिछाई,
और भाग्य - रेखाओं की भी,
बनी मिटी परछाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[५]

हाथों हाथ प्राण फुटपाथों,
पर लुटते जाते हैं,
पल-पल, पग-पग, पर भूखों के,
दम घुटते जाते हैं।
इस अकाल में ही अकाल यह,
क्रूर काल लाया है,
अथवा महानाश का साँचा,
नया ढाल लाया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[६]

तड़प रहे कंकाल न कहने,
पाते मन की बातें,
आज सुनहले दिवस बन गये,
उनकी काली रातें।
दाने दाने के सपने अब,
दाने देख रहे हैं,
क्रूर काल की चाल हाय!
अनजाने देख रहे हैं।

14537

103

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[७]

गलियों में कितने ही माँ के,
लाल क्षुधित सोते हैं,
सूख गये आँखों के आँसू,
यह दुर्दिन होते हैं।
धँसी हुई भीतर को आँखें,
पर अनिमेष निहारें,
बोल न आता हाय! भूख से,
कैसे किसे पुकारें?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[८]

कँपते सूखे हाथ उठा कर,
मुँह तक ही ले जाते,
दे दो कुछ भूखों मरते हैं,
इंगिति से बतलाते।
ऊषा की लाली का विष या,
रवि - किरणों की ज्वाला,
पीकर सो जाते हैं कितने,
संध्या - तम का प्याला।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[९]

चलते चलते गिरे जहाँ बस,
वहीं समाधि बनी है,
ताजमहल है वहीं, वहीं बस,
काशी - भूमि बनी है।

एक एक पसली पर उनकी,
अँकित व्यथा कहानी,
रुक रुक अन्तिम हिचकी उनकी,
कहती है नादानी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[१०]

शिशु मृत-माता के स्तन से,
लिपट दूध पीते हैं,
है न पूछने वाला कोई,
मरते या जीते हैं।

जिस आँचल से धूलि पोंछ कर,
माँ ने था दुलराया,
आज उसे दुधमुहे बालकों,
ने निज कफ़न बनाया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[११]

माता के दिल से तो पूछो,
उसकी मर्म कथा को,
छिन्न भिन्न उर के टुकड़े लख,
होती व्यथा व्यथा को।

पत्थर - प्रतिमा भी पसीजती,
जब तप-जल - से भीजें,
चूम रहे सड़कों के पत्थर,
पत्थर दिल न पसीजे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[१२]

यही भविष्य देश का उज्ज्वल,
यही राष्ट्र आशा हैं,
माता की भी छिपी इन्हीं में,
जीवन - अभिलाषा हैं।

मृदु लोरी गा, तेल लगा कर,
झालर गई सजाई,
देख न पाया रवि भी सहसा,
इनकी छबि - परछाई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[१३]

यह भी हैं मानव, इनके भी,
नव अरमान भरे थे,
पंच - तत्व - निर्मित - तन - सुन्दर,
यौवन से निखरे थे।

गूंजा था इनका भी आँगन,
विहँगों के गीतों से,
हेम बरसता था इनके भी,
महलों के भीतों से।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[१४]

जीवन का वसन्त इनके भी,
खिल कर हँसता आया।
गायी कोकिल और साथ में,
मदन विहँसता आया।

किन्तु, सुखों की दुनिया इनकी,
आज ! हो रही सूनी,
ताप रहे हैं आज तपस्वी,
हाय ! मृत्यु की धूनी।

Sri Pratap Singh Library Srinagar.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[१५]

जीवन - दीप असंख्य बुझ रहे,
जिन सड़कों पर नीचे,
उसी जगह ऊपर महलों में,
जाते विभव उलीचे।

भीषण हाहाकार - कराहें—,
आहें कहीं सुनातीं,
विधवायें - मातायें - बहिनें,
भूख भूख चिल्लातीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[१६]

किन्तु, कहीं पर रम्भाएँ,
इठलातीं गीत सुनातीं,
झूम झूम वैभव के आगे,
रंगरेलियाँ मनातीं।
बज्र-हृदय उनके न कान यह,
क्षुधित कराहें सुनते।
अपनी जीवन - चादर आहों,
के धागों से बुनते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[१७]

क्रय - विक्रय हो रहा नारियों,
का वैभव के आगे,
चाँदी के टुकड़ों में बिकते,
हैं सुत - सुता अभागे।
अगर किसी ने मुट्ठी भर भी,
चावल सड़े दिखाये,
दौड़े वहीं क्षुधित नर - नारी,
श्वान साथ ही आये।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[१८]

हाय ! आज मानव कुत्ते की,
सँगति है यह कैसी ?
खाते छीन हाथ के टुकड़े,
दुर्गति है यह कैसी ?
नभ से चील - काग भी झपटे,
छीने मुँह के दाने,
छूट गया जो आया कर में,
बिधि की गति बिधि जाने ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[१९]

आगे वहीं नालियों में सब,
सँग सँग चुनते दाने,
भोग रहे रौरव - दुख, कलरव,
दीवाने क्या जाने ?
नर पशु और पावना - पावन,
का कुछ भेद नहीं हैं,
काशी - मक्का - मगहर उनके,
कण में छिपे यहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[२०]

हाय ! भूख की भीषण लपटों,
में जलती है काया,
चिता बन गई स्वयं उन्हीं की,
कंचन - काया - छाया।
ताप रहे कितने ही भूखे,
दीवाली में होली,
भर न सका कोई भी दानी,
इन भूखों की झोली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[२१]

नभ - चुम्बी महलों से कह दो,
मणि - दीपक न रहेंगे,
उमड़ धरा से जब दुखियों के,
आँसू उधर बहेंगे,
यह वैभव मिट्टी में मिल कर,
उनसे दूर बहेंगे,
हम न सही, इतिहास सँदेशा,
इनका कभी कहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[२२]

कौन भला गंगाजल-तुलसी-सोना,
मुँह में डाले ?
माँ के लाल मर रहे भूखों,
इन को कौन सँभाले !
जन - समुदाय उसी जनपथ से,
नित ही आता जाता,
किसने भला निभाया इनसे,
मानवता का नाता ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चौराहे से

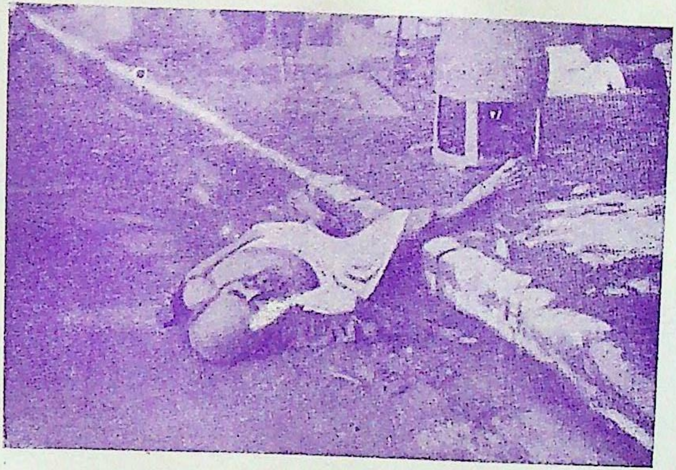

कौन भला गंगाजल-तुलसी-सोना, मुंह में डाले ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[२३]

कोई समवेदना वेदना,
में न हाय ! दिखलाता,
आज न कोई पंडित - ज्ञानी,
दया - धर्म सिखलाता।
अपने जीवित भाई भी शव,
—के समान दिखलाते,
श्वान-काग -गीदड़ हा ! उनको,
नोच नोच कर खाते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[२४]

क्षुधा - ग्रस्त मरते मरते भी,
उनकी भूख बुझाते,
पर न हाय ! यह वैभवधारी,
उन पर दया दिखाते।
यह पूंजीपति आपति में पति,
सम्पति दे न बचाते,
जब कि सभी आगे पीछे हैं,
उसी मार्ग पर जाते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[२५]

उधर लगे अम्बार अन्न के,
इधर लाश पर लाशें,
उधर टूटते प्याले मधु के,
इधर टूटती स्वासें।

बहुत चल चुकीं प्राणों के सँग,
धन की अनुचित घातें,
सदा न समय समान रहेगा,
रह जायेंगी बातें।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[२६]

शिव के जटा जूट से गंगा,
अम्मृत सा जल लाई,
साठ - सहस्र सगर - सुवनों ने,
यहीं सजीवनि पाई।

अन्तकाल विश्राम जान्हवी,
आँचल में मिलता है,
जीवन - फूल उसी की लहरों,
में पड़ कर खिलता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[२७]

यदि यह सब है सत्य, किनारों,
से माँ करो किनारा,
बढ़ आओ पावन जल दे कर,
दे दो इन्हें सहारा।

जीवित हों कंकाल सत्य हो,
माँ ! यश विमल तुम्हारा,
हो जाये फिर वही पूर्ववत्,
पावन देश हमारा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[२८]

दुर्बल दीन सुदामा गठरी,
तन्दुल की लाये थे,
मैंने सुना, कि मोहन ने वह,
छीन छीन खाये थे।

आवें वह इस बार इधर फिर,
छीना - झपटी होवे,
बिखर जाँय चावल क्षुधितों का,
भला उन्हीं से होवे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[२९]

सम्भव है पड़ जाँय छिटक कर,
मुँह में कुछ कण इनके,
जीवित हों खुल जाँय नयन,
मुँद गये अभी हैं जिनके।

कलकत्ता ! सत्ता यह तेरी,
पत्ता सी हिलती है,
पलक मारते ही सुन्दरता,
मिट्टी में मिलती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[३०]

पूँजीवादी युग ने करवँट,
लिया न आँखें खोलीं।
और शेष के सहस फणों की,
भी न पँक्तियाँ डोलीं।

क्या महेश की मुन्डमाल में,
अब भी शेष कमी है!
पापपूर्ण हा! बसुन्धरा तू!
फिर भी कहाँ थमी है?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

चौराहे से

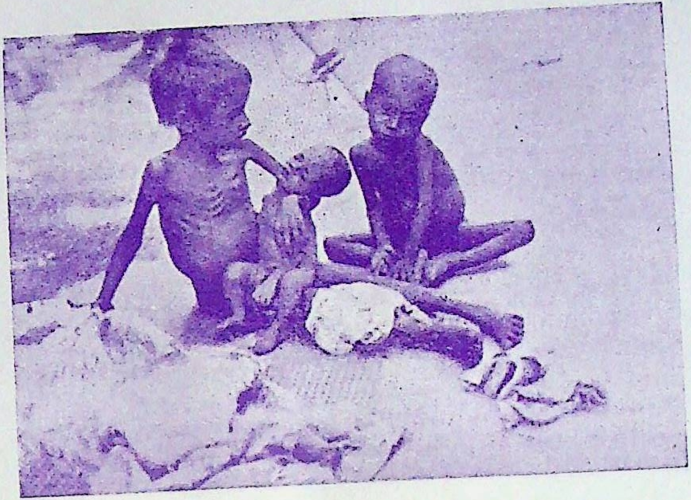

आज कुशासन में कितने ही, अन्तिम श्वासें लेते,
जीवन की नौका सूखे में, तड़प तड़प कर खेते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[३१]

अगणित नर-मेधों से अब भी,
तूने शान्ति न पाई,
कलकत्ते की काली ! क्या ! तू !
अब भी नहीं अघाई ?

आज कुशासन में कितने ही,
अन्तिम श्वासैं लेते,
जीवन की नौका सूखे में,
तड़प तड़प कर खेते ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[३२]

बन जाती अपनी नादानी,
जग की राम कहानी,
फुटपाथों पर सोती देखी,
मैंने चढ़ी जवानी।

पोंछ गये सिन्दूर सदा को,
हाय ! चूड़ियाँ छूटीं।
यहीं भाग्यवानों की क़िस्मत,
बनी बनाई फूटी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[३३]

शाशन, आशन छोड़ हुताशन,
—घर में लगी बुझावे,
उलझी राष्ट्र - समस्यायें फिर,
आगे की सुलझावे।
धरे हाथ पर हाथ देखते,
यह अनाथ मरते हैं,
सुधा-दान दे शशि जीवन दे,
हाय न दुख हरते हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[३४]

चीर हीन होते द्रौपदि को,
देख दौड़ आए थे,
रंग बिरंगे परिधानों के,
ढेर साथ लाये थे।
किन्तु, आज लाखों ललनायें,
वस्त्रहीन बिलखातीं,
लाज - जहाज डूबते उनके,
दया न मोहन ! आती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

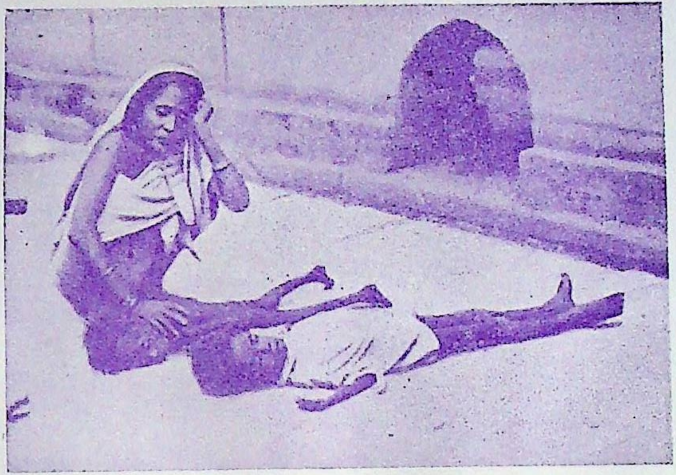

नाथ ! डूबते को तिनके का, होवें आप सहारा,
नाथ हाथ दें, तभी साथ दें, फूटा भाग्य हमारा ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[३५]

नाथ ! डूबते को तिनके का,
होवें आप सहारा,
नाथ हाथ दें, तभी साथ दे,
फूटा भाग्य हमारा ।
शपथ ! आज उन मां बहिनों की,
भूखी जो कि बिलखतीं,
जिनकी भीगी पलकें अब भी,
दया - दृष्टि हैं लखतीं ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[३६]

शपथ ! तुम्हें है उस सुहाग की,
जिसके तुम अभिमानी,
शपथ ! तुम्हें उस माँ-आँचल की,
जिसके सुत - वर - दानी ।
शपथ ! तुम्हें हैं उसी दूध की,
पीकर जिसे बढ़े हो,
देश-शपथ ! जिसके हित बलिपर,
बारम्बार चढ़े हो ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[३७]

शपथ ! पाक मसजिद की ऊँची,
सुन्दर मीनारों की,
और शपथ हैं ठाकुर जी के,
भी ठाकुर द्वारों की।
सिक्ख-सपूतो ! शपथ कटारों की,
तुमको प्यारों की।
शपथ गुरू गोबिन्द सिंह की,
ऊँचे गुरुद्वारों की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[३८]

शपथ आज ईसा की, गिरजाघर
की दीवारों की,
खुली शपथ ! मानवता की है,
जीवन अधिकारों की।
तुमको अपनी शपथ उठो ! बस,
अब भी आँखें खोलो ?
मानवता की चादर के यह,
काले धब्बे धो लो !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[३९]

उठो ! शपथ है पांञ्चाली के,
खुले हुए केशों की,
शपथ भूख से बिकल तड़पते,
हुए नग्न वेशों की।
शपथ मुहम्मद साहब की है,
ईसा के बलिदानों की,
शपथ बाइबिल की कुरान की,
और धर्म दीवानों की।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[४०]

रवि किरणों से खींच नीर फिर,
जग को हैं ज्यों देता,
नीरद सारा नीर न अपने,
में ही है भर लेता।

सुमन-सुगन्धि-कोष-चिर-संचित,
हँस हँस सदा लुटाते,
त्यों विपत्ति में मानव,
मानव का हैं हाथ बँटाते।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[४१]

फिर से कर्ण - दधीच आदि की,
कर दो सत्य कहानी,
नई करो वह हरिश्चन्द्र की,
फिर से कथा पुरानी।
खुले और फैले हाथों में आओ,
कुछ तो धर, दो!
बढ़ो! उठाओ हाथ तनिक कुछ,
तो भविष्य को कर दो!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[४२]

उठो ! भाग्य के ठेकेदारो !,
आओ इधर निहारो !
धूलि कफ़न है, धरा-कुशाशन,
जिनकी, दशा विचारो !
इनकी अँधियारी - दुनियाँ में,
ममता - दीप जलाओ !
मानव हैं, यह भी इससे ही,
समता - नीर पिलाओ ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

[४३]

कवि ने जो सुवर्ण-कण अपने,
यह अनमोल लुटाए,
कितने भूले भटके सोते,
साथी नए जगाए।
आँखें खोल देख लो दुनिया,
बहुत किया नादानी
ऐसी भीषण भूल न फिर से,
कभी पड़े दोहरानी।

Pratap Singh Library Srinagar

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

हृदय का कोना

[ले०—श्री अनन्तप्रसाद विद्यार्थी बी० ए०]

यह रोमाञ्चक उपन्यास हिन्दी के उदीयमान उपन्यासकार श्री अनन्तप्रसाद विद्यार्थी बी० ए० की नवीनतम रचना है। नारी के रूप-लावण्य और मोहक आकर्षणों से अपने को सर्वथा सुरक्षित रखने वाले एक ऐसे तरुण नायक के जीवन का अध्ययन इसमें उपस्थित किया गया है जिसे पढ़कर पाठक विस्मय, कुतूहल, विमर्श और विचारोत्तेजन में लीन हो जाते हैं। मूल्य १॥)

SPS
891.431 J 20 C
14537

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

81
J20C

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

अंगारे

[व्यक्ति और समाज की जलती हुई मनस्थितियों का यथार्थ चित्रण]

लेखक—श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी

दो सम्मतियाँ—

"कहानियों में समाज के सम्पन्न लोगों की नैतिकता, जीवन और आदर्श का खोखलापन और उनका अपनी परिस्थिति के प्रति तीव्र असन्तोष है। "सम्बन्ध ?" कहानी में गाँव के मज़दूर के जीवन का चित्र और उसकी आज की परिस्थिति स्तुत्य है। इस कहानी का अंतिम पैरा तो इतिहास की चीज़ है। "संकल्पों के बीच में" कला का अच्छा विकास और समाज का चित्र है। "रजनी" कहानी तो समय के चित्रण, असन्तोष की कलात्मक व्यञ्जना, तीव्र किन्तु स्वाभाविक व्यंग्य और साथ ही प्रगतिशीलता का अपूर्व उदाहरण है। वह आज के हमारे समाज का नग्न सत्य है।"

—"विश्ववाणी" अप्रैल '४४

103

"कहानियाँ समाज के विभिन्न पहलुओं पर नये सिरे से रोशनी डालती हैं और उन्हें नये रूप में हमारे सामने उपस्थित करती हैं। घटना-प्रधान, मनोवैज्ञानिक और विचारोत्पादक हैं। मुख्य चरित्रों का चित्रण सफल हुआ है और लेखक को चरित्रों की मानसिक स्थिति की गहराइयों तक पहुँचने में सराहनीय सफलता मिली है। शैली गम्भीर, भाषा चुस्त और महावरेदार है।

—"तरुण" मार्च-अप्रैल '४४

अत्यन्त सुन्दर गेटअप मूल्य १॥)

हिन्दुस्तानी पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE